



5. गुणवती कन्या



संस्कृत साहित्य में कवि दंडी गद्यकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उन्होंने 'दशकुमारचरितम्' नामक गद्य ग्रन्थ की रचना की है। इस ग्रन्थ की कथावस्तु कवि की अपनी कल्पना है। दस कुमार सुनिश्चित, अलग-अलग दस दिशाओं में यात्रा के लिए निकलते हैं। अपनी-अपनी यात्रा के दौरान कुमारों ने जो अनुभव किया, उन अनुभवों का वर्णन दस उच्छ्वासों के रूप में कवि ने किया है अतः इस ग्रन्थ में दस उच्छ्वास हैं। छोटे उच्छ्वास में मंत्रगुप्त अपने यात्रानुभव का वर्णन करते हैं। इस दौरान वे शक्तिकुमार का एक आख्यान सुनाते हैं। इस आख्यान को संक्षिप्त और संपादित करके यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

स्त्री और पुरुष दोनों गृहस्थ जीवन रूपी रथ के दो चक्र (पहिए) हैं। जिस तरह रथ में दोनों पहिए आकार और प्रकार में समान होने चाहिए, ठीक उसी तरह गृहस्थ जीवन रूपी रथ के पहिए के समान स्त्री-पुरुष का आकार और प्रकार में समान होना आवश्यक है। प्रस्तुत कथा के नायक शक्तिकुमार स्वयं गुणवान हैं। अतः वे अपने समान गुणवती कन्या से विवाह करना चाहते हैं। उन्हें जो चाहिए वैसे गुण कन्या में हैं या नहीं, यह जानने के लिए उन्होंने एक योजना बनाई। योजना के अनुसार जो कन्या मात्र एक प्रस्थ धान में से विविध व्यंजनों का निर्माण कर भोजन करवा सके, वह कन्या गुणवती है, ऐसा समझना चाहिए। तत्पश्चात् इस प्रकार की कन्या के सामने विवाह प्रस्ताव रखेंगे, यदि वह कन्या इस विवाह प्रस्ताव को स्वीकार करती है तो, वे उससे विवाह कर लेंगे।

गुणवती कन्या को प्राप्त करने के लिए देश-देशान्तर में भ्रमण कर रहे शक्तिकुमार को कावेरी नदी के किनारे बसे कांची नगर में ऐसी एक कन्या मिली। इस कन्या ने मात्र एक प्रस्थ धान में अपनी बुद्धिकौशल के बल से विविध व्यंजन तैयार किए और उन व्यंजनों को प्रेमपूर्वक खिलाकर शक्तिकुमार को प्रसन्न कर दिया। इस तरह यह कन्या शक्तिकुमार की परीक्षा में उत्तीर्ण हो गई। शक्तिकुमार ने उस कन्या के सामने विवाह प्रस्ताव रखा और कन्या की सहमति से उससे विवाह कर लिया। इस कथा से यह सीख मिलती है कि सीमित साधनों के होते हुए भी, गुणवान व्यक्ति अपनी बौद्धिक प्रतिभा के बल पर अपनी इच्छानुसार सुख प्राप्त कर सकता है। यहाँ (इस पाठ में) आनेवाले कर्तारि भूतकृदंत(क्तवत्) के रूपों पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए।

काञ्चीनगरे शक्तिकुमारो नाम एकः श्रेष्ठिपुत्रः प्रतिवसति स्म। स यदा स्वकीयस्य जीवनस्य द्वाविंशतितमे वर्षे प्रविष्टस्तदा चिन्तामापन्नः - नास्ति दारविहीनानाम् अननुरूपगुणदाराणां च सुखम्। तत्कथं गुणवतीं भार्याम् अहं विन्देयमिति।

ततः स प्रभूतं विचार्य वस्त्रान्ते पिनद्धशालिः दारग्रहणाय विविधान् देशान् अभ्रमत्। एकदा स कावेरीतीरपत्तने समागतः। अत्र सः कूपे विरलभूषणां कुमारीमेकाम् अपश्यत्। तस्याः रूपसम्पदाभिभूतः सोऽचिन्तयत् - आकृष्टं मे हृदयम् अस्याम्। तदेतां परीक्ष्य विवाहप्रस्तावं कृत्वा, तस्याम् सम्मतौ उद्वहामि। स तां निकषा संगत्य सविनयम् आह - अस्ति ते कौशलं शालिप्रस्थेन अनेन सम्पन्नमाहारं मां भोजयितुम् ?



ततः सा ओमिति उक्त्वा प्रस्थमात्रं धान्यमादाय श्रेष्ठिपुत्रस्य याचनानुसारं कर्तुं प्रवृत्ता ।

ततः आदो सा बुद्धिमती कन्या तान् शालीन् प्रथमम् आतपे तप्तवती । ततः समायां परिशुद्धायां भूमौ तान् अघट्टयत् । अनेन तुषेभ्यस्तण्डुलाः पृथक् सज्जाताः ।

तण्डुलान् सम्प्राप्य सा तुषान् भूषणानां मार्जनार्थं स्वर्णकाराय विक्रेतुं धात्रीम् अकथयत् । तस्मात् यत् धनं मिलति, तेन काष्ठानि आहर इति च धात्रीं निवेदितवती ।

धात्री काष्ठानि आनीतवती । तदनन्तरं सा तण्डुलान् असकृत् जलेन प्रक्षालितवती, उष्णीकृते जले च तान् प्रक्षिप्तवती । अल्पीयसा कालेनैव तण्डुलाः सिद्धाः सज्जाताः । ततः इन्धनानि जलेन शमयित्वा कृष्णाङ्गारानपि तदर्थिभ्यः प्रेषयित्वा यत् धनं लब्धं तेन धनेन शाकं घृतं दधि तैलं च क्रीतवती । तेन च सा विविधानि व्यञ्जनानि सम्पादितवती ।

सम्पन्ने आहारे सा कन्या धात्रीमुखेन अतिथये प्रथमं स्नातुं निवेदितवती । ततः स्नानशुद्धाय तस्मै अतिथये सा पेयोपाहारपूर्वं भोजनं घृतसहितम् ओदनं व्यञ्जनञ्च अयच्छत् ।

मध्ये मध्ये सा भोज्यादीनां विविधानां पदार्थानां वर्णनं कृत्वा अतिथेः भोजनरुचिमपि अवर्धयत् । भुक्ते तु तस्मिन् अतिथौ तया ताम्बूलस्यापि व्यवस्था कृता । एवं स्वकीयया गुणसम्पदा प्रस्थपरिमितेन धान्येन विविधानि व्यञ्जनानि विरचितवती कन्या प्रति समाकृष्टः शक्तिकुमारः विवाहस्य प्रस्तावं कृतवान् । कन्यया स्वीकृते प्रस्तावे तां विधिवदुपयम्य स्वनगरमनयत् ॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिङ्ग) श्रेष्ठिपुत्रः सेठ का पुत्र, साहूकार का पुत्र **दाराः** पत्नी (यह पुल्लिङ्ग का 'दार' शब्द सदैव बहुवचन में ही प्रयुक्त किया जाता है और 'पत्नी' स्त्रीलिङ्ग का अर्थ प्रदान करता है ।) **तण्डुलः** धान, चावल **तुषः** अनाज का छिलका **आतपः** गर्मी (सूर्य-अग्नि आदि की) **स्वर्णकारः** सुनार **कृष्णाङ्गारः** कोयला **प्रस्तावः** अपने विचार को प्रस्तुत करना, उल्लेखनीय बात

(स्त्रीलिङ्ग) भार्या पत्नी **सम्पत्तिः** अनुमति, सहमति **शालि** धान **धात्री** माता के उम्र की सेविका

(नपुंसकलिङ्ग) काञ्चीनगरम् दक्षिण भारत में स्थित एक प्राचीन नगर **कौशलम्** कुशलता, प्रवीणता **धान्यम्** अनाज, अन्न **काष्ठम्** लकड़ी **इन्धनम्** प्रज्वलित करने वाली सामग्री (लकड़ी, कोयला आदि) **शाकम्** सब्जी, शाक **घृतम्** घी **दधि** दही **व्यञ्जनम्** बानगी (मिर्च, मसाला, चटनी आदि में बनाई हुई विभिन्न प्रकार की खाद्य वस्तुएँ)।

सर्वनाम : एकः (पु.) एक **तस्याः** (स्त्री.) उसका **एताम्** (स्त्री.) इसका **ताम्** (स्त्री.) इसे **ते** ('तव' का वैकल्पिक रूप) तुम्हारे, तुम्हें **अनेन** (पु.) इससे, इसके द्वारा **सा** वह (स्त्री.) **तान्** (पु.) उन्हें **तस्मात्** (पु. नपु.) इसलिए, इस कारण **तेन** (पु.) उसके द्वारा, उसने **तस्मै** (पु. नपु.) उसके लिए **तस्मिन्** (पु. नपु.) उसमें **तया** (स्त्री.) उसे, उसके द्वारा

विशेषण : स्वकीयस्य (जीवनस्य) अपना (जीवन का) **द्वाविंशतितमे** (वर्षे) बाइसवें (वर्ष में) **गुणवतीम्** (भार्याम्) गुणवती (पत्नी) को **विरलभूषणाम् एकाम्** (कुमारीम्) विरल आभूषणों वाली एक कन्या ने **सम्पन्नम्** (आहारम्) तैयार (हुए) (भोजन) को, बनाए गए (भोजन) को **प्रस्थमात्रम्** (धान्यम्) मात्र एक प्रस्थ (लगभग दो किलो जितना अनाज) को **बुद्धिमती** बुद्धिशाली, प्रखर बुद्धिवाली **समायाम् परिशुद्धायाम्** (भूमौ) समतल और साफ (जमीन) पर **उष्णीकृते** (जले) गरम किए गए (पानी) में **अल्पीयसा** (कालेन) थोड़े ही समय में **सम्पन्ने** (आहारे) भोजन तैयार हो जाने पर **स्नानशुद्धाय तस्मै** (अतिथये) स्नान से शुद्ध हुए उस अतिथि को **विविधानाम्** (पदार्थानाम्) अनेक प्रकार के (पदार्थों) को **प्रस्थपरिमितेन** (धान्येन) मात्र एक प्रस्थ जितने (अनाज से)

अव्यय : यदा जब तदा तब **एकदा** एकबार **निकषा** समीप, पास **ओमिति** ओम् ऐसा कहकर, हाँ कहके (संस्कृत भाषा में किसी भी बात को स्वीकार करने के लिए ओम् शब्द बोला जाता है ।) **असकृत्** अनेक बार, बार-बार, लगातार

समास : श्रेष्ठिपुत्रः (श्रेष्ठिनः पुत्रः - षष्ठी तत्पुरुष) । दारविहीनानाम् (दारैः विहीनः, तेषाम्-तृतीया तत्पुरुष) । अननुरूपगुणदाराणाम् (न अनुरूपम् - अननुरूपम्, नञ् तत्पुरुष) । अननुरूपं गुणः यस्याः सा अननुरूपगुणा, बहुव्रीहि) अननुरूपगुणा च अमी दाराः अननुरूपगुणदाराः, तेषाम् - अननुरूपगुणदाराणाम् - बहुव्रीहि) । वस्त्रान्ते (वस्त्रस्य अन्तः, तस्मिन् - षष्ठी तत्पुरुष) । पिनद्धशालिः (पिनद्धा शालिः येन सः - बहुव्रीहि) । दारग्रहणाय (दाराणां ग्रहणम् - षष्ठी

तत्पुरुष)। कावेरीतीरपत्तने (कावेर्याः तीरम् - कावेरीतीरम्, षष्ठी तत्पुरुष) कावेरीतीरस्य पत्तनम् - षष्ठी तत्पुरुष)। विरलभूषणम् (विरलं भूषणं यस्याः सा, ताम् - बहुव्रीहि)। रूपसम्पदा (रूपस्य सम्पद्, तया - षष्ठी तत्पुरुष)। विवाहप्रस्तावम् (विवाहस्य प्रस्तावः, तम् - षष्ठी तत्पुरुष)। शालिप्रस्थेन (शालीनाम् प्रस्थः, तेन - षष्ठी तत्पुरुष)। स्वगृहम् (स्वस्य गृहम् - षष्ठी तत्पुरुष)। प्रक्षालितपादम् (प्रक्षालितौ पादौ येन सः, तम् - बहुव्रीहि)। कृष्णाङ्गारान् (कृष्णः च असौ अङ्गारः - कृष्णाङ्गारः, तान् - कर्मधारय)। धात्रीमुखेन (धात्र्याः मुखम्, तेन - षष्ठी तत्पुरुष)। स्नानशुद्धाय (स्नानेन शुद्धः तस्मै - तृतीया तत्पुरुष)। पेयोपाहारपूर्वम् पेयस्य उपाहारः - षष्ठी तत्पुरुष, पेयोपाहारः पूर्वं यस्य तद् - बहुव्रीहि)। घृतसहितौदनम् (घृतेन सहितम् घृतसहितम्, तृतीया तत्पुरुष), घृतसहितं च तद् ओदनम्, घृतसहितौदनम् - कर्मधारय)। भोजनरुचिम् (भोजने रुचिः - सप्तमी तत्पुरुष)। गुणसम्पदा (गुणानां सम्पद्, तया - षष्ठी तत्पुरुष)। प्रस्थपरिमितेन (प्रस्थेन परिमितम्, तेन - तृतीया तत्पुरुष)। स्वनगरम् (स्वस्य नगरम् - षष्ठी तत्पुरुष)।

कृदन्तः (सं.भू.कृ.) उक्त्वा कहकर, बोलकर **आदाय** लेकर, ग्रहण करके, स्वीकार करके **सम्प्राप्य** प्राप्त करके, पाकर **शमयित्वा** बुझाकर, शमन करके **प्रेषयित्वा** भेजकर

(क.भू.कृ.) प्रविष्टः प्रवेश किया, अन्दर गया **आपन्नः** प्राप्त हुआ **समागतः** पहुँचा हुआ **अभिभूतः** हराया, पराभव किया **आकृष्टम्** आकर्षित हुआ, आकृष्ट हुआ **तप्तवती** तपाया **उक्तवती** कहा, बोलीं **निवेदितवती** निवेदन किया **प्रक्षालितवती** धोया **प्रक्षिप्तवती** डाला **क्रीतवती** खरीदा **सम्पादितवती** संपादित किया **दत्तवती** दे दिया **वर्धितवती** बढ़ा दिया, वृद्धि की **कृता** किया **विरचितवती** रचाया, बनाया **समाकृष्टः** आकर्षित हुआ, खिंचा हुआ, आकृष्ट हुआ **कृतवान्** किया

(हे.कृ.) भोजयितुम् खिलाने के लिए, भोजन कराने के लिए **विक्रेतुम्** बेचने के लिए **स्नातुम्** स्नान करने के लिए, नहाने के लिए

क्रियापदः प्रथम गण (परस्मैपदी) प्रति + वस् (प्रतिवसति) रहना, बसना, निवास करना **भ्रम् (भ्रमति)** भ्रमण करना, घूमना **उत् + वह् (उद्वहति)** विवाह करना, वहन करना **नी (नयति)** ले जाना

छठा गण (परस्मैपदी) मिल् (मिलति) मिलना

(आत्मनेपदी) विन्द् (विन्दते) प्राप्त करना

दसवाँ गण (परस्मैपदी) चिन्त् (चिन्तयति) विचार करना, चिन्तन करना **घट्ट् (घट्टयति)** घिसना रगड़ना, घोंटना

विशेष

1. शब्दार्थः चिन्तामापन्नः चिन्ताग्रस्त, चिन्तातुर **अनुरूपगुणदाराणाम्** अनुरूप गुणों से विहीन पत्नीवालों को **विन्देयम्** मैं प्राप्त करूँ **प्रभूतम् विचार्य** खूब (सोच) विचार करके **वस्त्रान्ते** कपड़े के किनारे पर, कपड़े के कोने **पिनद्धशालिः** बंधे हुए धानवाला **दारग्रहणाय** पत्नी को प्राप्त करने के लिए, पत्नी को पाने के लिए **रूपसम्पदाभिभूतः** रूप की सम्पत्ति से प्रभावित **तदेताम्** इसलिए इसकी **सत्याम् सम्मतौ** (सम्मति) सहमति होने पर **एनाम् उद्वहामि** इसके साथ विवाह करूँगा **आह** बोला, कहा **शालिप्रस्थेन** एक प्रस्थ जितने धान से **ओमिति उक्त्वा 'ॐ'** ऐसा कहकर, स्वीकृति देकर **आतपे तप्तवती** धूप में तपाया **तान् अधट्टयत्** उसे (शालि) घिसा, कूटा **मार्जनार्थम्** साफ करने के लिए, धोने के लिए **धात्रीमुक्तवती** धात्री से- सेविका से कहा **आहर** ले आओ **जलेन प्रक्षालितवती** पानी से धोया, पानी से साफ किया **सिद्धाः सञ्जाताः** तैयार हो गए **इन्धनानि शमयित्वा** लकड़ी को बुझाकर **कृष्णाङ्गारान्** कोयले को **तदर्थिभ्यः** उनकी आवश्यकता वाले को **धात्रीमुखेन** धात्री के मुख से, धात्री के द्वारा **पेयोपाहारपूर्वम्** नास्ता-पानी के साथ **घृतसहितौदनम्** घी युक्त भात, भात में घी मिलाकर **भुक्ते तु तस्मिन् अतिथौ** वे (मेहमान) अतिथि खा चुके तब **व्यञ्जनानि** व्यंजनों को 'ताम्बूलस्यापि' ताम्बूल की, पान की भी 'गुणसम्पदा' गुणरूपी संपत्ति से, **कन्याम् प्रति** कन्या की तरफ **'कन्यया स्वीकृते प्रस्तावे'** कन्या ने जब प्रस्ताव स्वीकार किया तब **विधिवत्** (अव्यय) विधि अनुसार, कायदानुरूप **उपयम्य** विवाह करके, परिणय करके

2. सन्धि : शक्तिकुमारो नाम (शक्तिकुमारः नाम) । स यदा (सः यदा) । प्रविष्टस्तदा (प्रविष्टः तदा) । सोऽचिन्तयत् (सः अचिन्तयत्) । स ताम् (सः ताम्) । तुषेभ्यस्तण्डुलाः (तुषेभ्यः तण्डुलाः) । कालेनैव (कालेन एव) । व्यञ्जनञ्च (व्यञ्जनं च) ।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

- (1) कस्मिन् वर्षे प्रविष्टः शक्तिकुमारः चिन्तामापनः। ☐
 (क) द्वाविंशतितमे (ख) विंशतितमे (ग) एकविंशतितमे (घ) चतुर्विंशतितमे
- (2) श्रेष्ठपुत्रः किमर्थं देशम् अभ्रमत् ? ☐
 (क) धनार्जनार्थम् (ख) विद्याग्रहणाय (ग) दारग्रहणाय (घ) धनग्रहणाय
- (3) बुद्धिमती कन्या शालीन् कुत्र तप्तवती ? ☐
 (क) अग्नौ (ख) आतपे (ग) चत्वरे (घ) समानायां भूमौ
- (4) तुषान् विक्रीय धात्री किम् आनीतवती ? ☐
 (क) घृतम् (ख) काष्ठानि (ग) जलम् (घ) शाकम्
- (5) कन्या धात्रीमुखेन अतिथिं प्रथमं किं निवेदितवती ? ☐
 (क) प्रतीक्षाकरणाय (ख) आसनग्रहणाय (ग) भोजनाय (घ) स्नानाय
- (6) इन्धनानि जलेन शमयित्वा कन्या किं प्राप्तवती ? ☐
 (क) कृष्णाङ्गारान् (ख) काष्ठानि (ग) जलम् (घ) शाकम्
- (7) भोजनान्ते कन्यया कस्य व्यवस्था कृता ? ☐
 (क) शयनस्य (ख) ताम्बूलस्य (ग) तक्रस्य (घ) मिष्टान्नस्य
- (8) कन्या विविधं व्यञ्जनं केन विरचितवती ? ☐
 (क) स्वकीयेन बुद्धिबलेन (ख) क्रीतेन इन्धनेन
 (ग) प्रस्थपरिमितेन धान्येन (घ) स्वकीयेन धनेन

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषया उत्तरत ।

- (1) श्रेष्ठपुत्रस्य नाम किम् आसीत् ?
- (2) देशान् भ्रमन् एकदा शक्तिकुमारः कुत्र समागतः ?
- (3) शक्तिकुमारः विरलभूषणां कुमारीं कुत्र अपश्यत् ?
- (4) कन्या तण्डूलान् केन प्रक्षालितवती ?
- (5) भोज्यादीनां पदार्थानां वर्णनं कृत्वा कन्या किं कृतवती ?

3. कृदन्तप्रकारं लिखत ।

- | | | | |
|---------------|-------|----------------|-------|
| (1) प्रविष्टः | | (2) आकृष्टम् | |
| (3) भोजयितुम् | | (4) उक्त्वा | |
| (5) आदाय | | (6) निवेदितवती | |

4. सन्धिविच्छेदं कुरुत ।

- | | |
|-----------------------|-------|
| (1) प्रविष्टस्तदा | |
| (2) सोऽचिन्तयत् | |
| (3) तुषेभ्यस्तण्डुलाः | |
| (4) व्यञ्जनञ्च | |

5. समासप्रकारं लिखत ।

- | | | | |
|-------------------|-------|--------------------|-------|
| (1) दारविहीनानाम् | | (2) घृतसहितम् | |
| (3) पिनद्धशालिः | | (4) विरलभूषणाम् | |
| (5) शालिप्रस्थेन | | (6) कृष्णाङ्गारान् | |
| (7) गुणसम्पदा | | (8) स्वनगरम् | |

6. उदाहरणानुसारं शब्दरूपं लिखत ।

	शब्द	लिङ्ग	विभक्ति	वचन
उदाहरणम् - वचनात् ।	वचन	नपुंसकलिङ्ग	पञ्चमी	एकवचन
(1) काञ्चीनगरे
(2) जीवनस्य
(3) भार्याम्
(4) दारग्रहणाय
(5) सम्मतौ
(6) अनेन

7. कोष्ठगतानि पदानि प्रयुज्य वाक्यानि रचयत ।

- (1) शक्तिकुमार सेठ का पुत्र निवास करता था ।
(श्रेष्ठिपुत्र शक्तिकुमार नि + वस्)
- (2) कुएँ के ऊपर एक विरलभूषणा कन्या को देखा ।
(कूप एका विरलभूषणा कुमारी दृश्)
- (3) सेठ के पुत्र को अपने घर ले आई ।
(श्रेष्ठिपुत्र स्वगृह आ + नी)
- (4) उससे धन प्राप्त होता है ।
(तत् धन मिल्)

- (5) धन से सब्जी, घी और तेल लाती हूँ।
(धन शाक घृत तैल च आ + नी)

8. मातृभाषायाम् उत्तराणि लिखत ।

- (1) शक्तिकुमार बाईस वर्ष के होने पर क्या विचार करते हैं ?
- (2) गुणवती कन्या की परीक्षा के लिए शक्तिकुमार की क्या योजना थी ?
- (3) कन्या क्या-क्या बेचती है और उससे क्या-क्या प्राप्त करती है ?
- (4) कन्या ने शक्तिकुमार की भोजन रुचि कैसे बढ़ाई ?
- (5) किस बात से आकृष्ट होकर शक्तिकुमार ने कन्या के सामने विवाह प्रस्ताव रखा ?

9. मातृभाषायां संक्षिप्तं टिप्पणं लिखत ।

- (1) शक्तिकुमार की परीक्षा-योजना
- (2) गुणवती कन्या का आयोजन

10. मातृभाषायाम् अनुवादं कुरुत ।

- (1) तत्कथं गुणवतीं भार्याम् अहं विन्देयमिति ।
- (2) एकदा स कावेरीतीरपत्तने समागतः ।
- (3) स्वर्णकाराय विक्रेतुं धात्रीमुक्तवती ।
- (4) उष्णीकृते जले च तान् प्रक्षिप्तवती ।
- (5) अतिथये प्रथमं स्नातुं निवेदितवती ।

प्रवृत्ति

- आदर्श नागरिक के गुणों की सूची बनाइए।
- किसी एक ही धान्य (अनाज) में से बनाए जाने वाले विविध व्यंजनों की सूची बनाइए।